

बंजारा संस्कृति की पहचान है बंजारा वेशभूषा

प्रा. डॉ. पवार आर.एस.

अध्यक्ष-हिंदी विभाग

जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

(वाणिज्य एवं विज्ञान)

बं

जारा एक घुमंतू जन जाति है। प्राचीन काल से बंजारे अपने गाय बैलों के साथ घूम फिर कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। बंजारों की अपनी एक संस्कृति है। जो अन्य जाति धर्म के लोगों से उन्हें अलग पहचान दिलाती है। आज भी बंजारा संस्कृति अपने आप में विशिष्ट एवं अलग पहचान बनाती नजर आती है। "अंग्रेजी शब्द, 'कल्चर' का पर्यायी हिंदी शब्द 'संस्कृति' है। मनुष्य जीवन जीने की शैली या ढंग संस्कृति है। सामाजिक शिष्ट व्यवहार को संस्कृति कहा जाता है। वह मनुष्य में परंपरागत रूप में विद्यमान रहती है। संस्कृति का प्रभाव समाज पर रहता है, इसी समाज में मनुष्य जन्म लेता है"।¹

बंजारा जन जाति एक घुमक्कड़ अर्थात् घुमंतू जाति है, लेकिन बंजारों की वेशभूषा पूरे देश और दुनिया में एक ही है। उनकी वेशभूषा में किसी राज्य या देश के निवास आदि के तौर पर कोई बदलाव नजर नहीं आता है। पूरे देश और दुनिया में कहीं भी जाओ उनकी वेशभूषा एक समान नजर आती है। वेशभूषा के कारण बंजारा जन जाति के लोग दूर से पहचान लिए जाते हैं। राजस्थानी वेशभूषा और बंजारों की वेशभूषा में समानता पाई जाती है। इस संदर्भ में मोतीराज राठोड का मत है कि, "बंजारा जन जाति की संस्कृति, रीति रिवाज, परंपरा, वेशभूषा, बोली, खानपान आदि का अध्ययन करने से पता चलता है कि, बंजारा जन जाति का मूल स्थान राजस्थान रहा है।" बंजारा स्त्री पुरुष दोनों की भी वेशभूषा विशिष्ट प्रकार की होती है। किसी भी जाति की वेशभूषा के पीछे उसका प्राचीन इतिहास होता है।² सिंधु घाटी सभ्यता में केशभूषा, वेशभूषा, गहने, अलंकार के अवशेष जो मिले हैं, उसमें लगभग नब्बे प्रतिशत समानता बंजारा नारी की वेशभूषा में आज भी दिखाई देती है।²

निमाड़ का सांस्कृतिक इतिहास ग्रंथ में बंजारा वेशभूषा का वर्णन इस प्रकार किया गया है। "पुरुष धोती कुर्ता पहनते हैं और फेटा (पगड़ी) बांधते हैं। स्त्रियाँ घेरदार लहंगा जुड़ावदार कंचुकी (काचळी) और बेलकेदार ओढ़नी पहनती हैं। वे अपने सिर पर एक हाथ की लकड़ी रखकर उस पर घूंघट काढ़ती हैं। उनके हाथों में कोहनी तक हाथी दांत के चूड़े रहते हैं तथा पांव में पीतल तथा कासे के गहने पहनती हैं।

कलानुरूप बंजारा वेशभूषा के नष्ट होने का डर सता रहा है। आज बदलते परिवेश में बंजारा नारी की वेशभूषा में स्थानिक प्रांतीय प्रभाव दिखाई देता है, तांडे में आज भी बंजारा नारी अपनी पारंपरिक वेशभूषा में दिखाई देती है। आज बंजारे पढ़ लिखकर शहर में बसने लगे हैं, तो उनके पारंपरिक वेशभूषा में बदलाव नजर आ रहा है। पढ़े-लिखे बंजारे अब अपनी वेशभूषा को सम्मेलनों तथा त्योहारों पर परिधान करते नजर आ रहे हैं। अब बंजारे अपनी वेशभूषा को जीवित रखने में प्रयास रत नजर आ रहे हैं। हिंदी फिल्मी दुनिया ने बंजारा वेशभूषा को जीवित रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी की कई फिल्मों में बंजारा वेशभूषा का प्रयोग पाया जाता है। निःसंदेह कहा जा सकता है कि बंजारा वेशभूषा बंजारों की पहचान है। जो बंजारा जन जाति को अन्य जाति समुदाय के लोगों से अलग पहचान देती है। बंजारा नारी की वेशभूषा में निम्न अंगों को देखा जा सकता है।

1) फेटिया -(घागरा) घागरा या लहंगा को बंजारा बोली भाषा में 'फेटिया' कहते हैं। फेटिया बंजारन नारीखुद बनाती है। फेटिया तैयार करने में उसे बहुत दिन लगते हैं। फेटिया घेरदार होता है। फेटिया दो प्रकार के होते हैं। एक सामान्य फेटिया और दूसरा पहरेदार फेटिया। इस संदर्भ में डॉ. यशवंत जाधव का मत है कि, " फेटिया दो प्रकार के होते हैं- सामान्य फेटिया लहंगे से अधिक घेरदार और घागरे से कुछ हल्का होता है। बंजारा स्त्री इसे रोजमर्रा के जीवन में धारण करती है। फेटिया दो-चार दिन में तैयार नहीं होता। इसको बनाने में एक साल भी

लग जाता है। इसको बनाने की प्रक्रिया बड़ी जटिल होती है। फेटिया तीन भागों में बंटा होता है -लेपो, घेरो और लावण। फेटिया में सबसे ऊपर लेपो, मध्य में गिरो तथा निचले भाग में झालर और गोट होती है। फेटिया में छोटे-छोटे कांच जेड़े होते हैं। फेटिया के घेरे को लेपो जोड़ देने पर उसे ढूंगोकहते हैं। सामान्य फेटिया की सिलाई कलात्मक नहीं होती, परंतु पहरेदार फेटिया की सिलाई कलात्मक होती है। पहरेदार फेटिया बनाते समय अलग-अलग रंग का कपड़ा जोड़कर बनाया जाता है। पहरेदार फेटिया उत्सव और त्यौहार पर सुहागन बंजारा नारी पहनती है। एक फेटिया का वजन पांच किलो तक होता है। फेटिया को बनाने में बीस मीटर कपड़े की आवश्यकता होती है। फेटिया मुख्य तौर पर कॉटन के कपड़े से बनाया जाता है। आजकल टेरी कॉट के कपड़े से भी फेटियां बनाये जा रहे हैं। फेटियां के लिए ज्यादातर लाल रंग के कपड़े का प्रयोग किया जाता है। आजकल रंग बिरंगे कपड़े का भी प्रयोग किया जा रहा है।

2) काचळी - बंजारा काचळी का मतलब चोली है। बंजारा नारी काचळी को विशेष प्रकार से बनाती है और सजाती है। बंजारा स्त्री अपनी छाती तथा बदन को ढकने के लिए काचळी अर्थात चोली का प्रयोग करती है। यह काचळी रंग-बिरंगे कपड़ों से बनाई जाती है। बंजारा स्त्री स्वयं अपने हाथ से सुई धागे से काचळी बनाती है। इसमें रंग-बिरंगे कपड़ों के साथ-साथ रंग बिरंगे धागों का प्रयोग किया जाता है। काचळी के प्रमुख पांच भाग होते हैं। जिनमें खविया, छेवटिया, थीकळी, पेटी तथा बाजूबंद आते हैं। इन पांचो भागों का कपड़ा अलग-अलग होता है। खविया को बनाना एक जटिल काम होता है। काचळी को दोनों भुजाओं पर तीन रंग के कपड़े से बनाया जाता है। जिनमें काला, पीला तथा लाल रंग का कपड़ा प्रयोग में लाया जाता है। छेवटिया छाती के भाग को ढकने के लिए होता है। छेवटिया के ऊपर कांच को जोड़ा जाता है, जो स्त्री के दोनों स्तनों को ढकती है, खेवटिया की भुजा पर खविया होता है। छेवटिया के सामने के भाग को पेटी कहते हैं। पेटी यह काचळी का निचला अंतिम भाग होता है। काचळी पर छोटे-छोटे कांच के टुकड़े जोड़े जाते हैं। काचळी के ऊपर की पेटी होती है। यह बंजारन नारी के लिए दर्पण का काम करती है। यह पेटी नारी की नाभि पर लटकती नजर आती है। काचळी के पीछे का भाग खुला होता है। काचळी को दो बंद होते हैं। जिससे पीछे पीठ पर गांठ बांध दी जाती है।

डॉ. श्रीराम शर्मा काचळी को लेकर लिखते हैं "छाती को ढकने वाले भाग को काचळी कहते हैं। जो टुकड़ों को जोड़कर बनाई जाती है। काचळी के टुकड़ों को तरकीब से जमाने क्रिया काचळी संवरना कहते हैं। काचळी का जो भाग स्तनों को ढकता है, उसे थिगली कहते हैं। दाएं बायें स्थलों को ढकने वाली प्रत्येक थिगली पर कांच के तीन-तीन टुकड़े लगाए जाते हैं। काचळी की भुजा पर जो पट्टा जुड़ता है, उसे खविया कहते हैं। प्रत्येक खविया में दो बड़े कांच और कुछ छोटे-छोटे टुकड़े भी जुड़े होते हैं। काचळी के किनारे किनारे चांदी की घुगरी होती है। काचळी के सामने के भाग को पेटी कहते हैं।"³

3) पामडी (ओढ़नी):- बंजारा बोलीभाषा में ओढ़नी को पामडी कहते हैं। ओढ़नी दो प्रकार की होती है। एक गोटेर सामान्य पामडी और दूसरी घूंघटेर पामडी। गोटेर पामडी लगभग चार, पांच मीटर तक कपड़े की होती है। उसे पांच मीटर कपड़े के दो भाग बनाकर जोड़ा जाता है। इस पामडी पर ऊपर नीचे गोटेर लगाकर तैयार किया जाता है। गोटेर के लिए नीले, लाल या काले रंग का विशेष कर प्रयोग किया जाता है। दूसरे प्रकार की घूंघट पामडी भी चार-पांच मीटर कपड़े से ही बनाई जाती है। इस पामडी में भी नीचे और ऊपर के भाग में गोटेर लगाया जाता है, परंतु उसके गोटेर पर 'घूंघट' जोड़ा जाता है। 'घूंघट' पामडी के ऊपरी हिस्से पर जोड़ा जाता है। घूंघट पर बंजारन नारी छोटे-छोटे कांच के टुकड़े जोड़ती है। कांच के झड़ने का काम बड़ा ही कलात्मक होता है। बंजारन स्त्री पामडी ओढ़ लेने से अधिक सुंदर दिखाई देती है। पामडी सर से नीचे खींचकर ओढ़ लेने पर वह घूंघट कहलाता है। पामडी के लिए ज्यादातर लाल भड़काऊ रंग का कॉटन का कपड़ा प्रयोग में लाया जाता है। आजकल टेरीकॉट के कपड़े से भी पामडी बनाई जा रही है। पामडी को लेकर बंजारा बोली भाषा में निम्न लोकगीत पाया जाता है।

"काळी पीळी रंगेरी गोरी ओढ़नी सिडाई रं
काळी ओढ़नी न घूंघटो लगाई रसिया
माई नकरा र, कतराक, मारु चकरा र,
कतरा क देखु नकरा र, मारु चकरा र"⁴

अर्थात गोरी ने काले पीले रंग की ओढ़नी ओढ़ रखी है। उस ओढ़नी पर रंग-बिरंगा घूंघट जोड़ा गया है। घूंघट पर कांच के छोटे-छोटे टुकड़े चमक रहे हैं। छोटे टुकड़े हैं। मैं इस

रूप को देखकर उसी गोरी के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा हूँ। उसका रूप मुझे देखा नहीं जा रहा है।

4) घुंगटो (घुंगट) :- बंजारा नारी की वेशभूषा में फेटिया, काचली, पामडी के साथ-साथ घुंगटो अर्थात घुंगट का भी अनन्य साधारण महत्व है। घुंगटो को ही बंजारा बोलीभाषा में घुंगट कहते हैं। घुंगट को सुहाग का प्रतीक माना जाता है। बंजारन नारी घुंगट का उपयोग कर पुरुष से तथा ससुराल वाले अन्य लोगों से अपना मुखड़ा छुपाने के लिए प्रयोग करती है। बंजारा स्त्री विवाह के बाद ही घुंगट परिधान करती है। घुंगट कलात्मक ढंग से बनाया जाता है। जिसमें रंग बिरंगी धागे का प्रयोग किया जाता है, रंग बिरंगे धागों से कांच के छोटे-छोटे टुकड़ों को लगाया जाता है। साथ ही घुंगट पर चवन्नी, अठन्नी, पांच पैसा, दस पैसा आदि को भी लगाया जाता है। इस प्रकार बंजारा स्त्री बड़ी कलात्मकता से घुंगट बनाती है। घुंगट ओढ़नी की शोभा बढ़ाता है। यशवंत जाधवने एक स्थान पर लिखा है, " हाथ भर का छाटिया (पामडी) बहुत कलात्मक होता है, यह ओढ़नी के उसी हिस्से पर टंगा जाता है, जो सर पर आती है।

घुंगट को लेकर बंजारा बोली भाषा में निम्न लोकगीत पाया जाता है।

" नायके साहेबेरी बोडी
काई रंगलेरी
घुंगटो ओढ झलमल व्हेरी
काई रंगलेरी"⁵

इस लोकगीत का अर्थ यह है कि, टांडे के मुखिया नायक की बहू ओढ़नी और घुंगट ओढ़ कर लहराती नजर आ रही है। इस लोकगीत में बहू की प्रशंसा की गई है। यह गीत पुरुष नृत्य के साथ गाते हैं। इस प्रकार के गीत विशेष कर उत्सव और त्यौहार पर गाए जाते हैं। वस्त्र और आभूषण पहनकर सज धज कर निकलने वाली नारी की प्रशंसा इस प्रकार से की जाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, बंजारा वेशभूषा बंजारा संस्कृति की पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- 1) डॉ. दत्तात्रेय रामचंद्र भोसले- घुमंतू जनजातियों के स्व कथनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन- पृ.130
- 2) प्रा. मोतिराज राठोड - प्राचीन बंजारा समाज व्यवस्था- पृ.67
- 3) डॉ. हुकुमचंद जाधव- घुमंतु जातियों का लोकसाहित्य और भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन- पृ.123
- 4) डॉ. के. के. जाधव - बंजारा लोक संस्कृति - पृ.23
- 5) डॉ. व्यंकट चव्हाण - बंजारा लोकगीत समाज और संस्कृति — पृ.31,32